विद्या भवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

वर्ग दशम् विषय संस्कृत शिक्षक श्यामउदय सिंह

ता:-२९/०८/२०२०(एन.सी.ई.आर.टी.पर आधारित)

पाठ:सप्तम: पाठनाम सौहार्द प्रकृते: शोभा

गद्यांश:

मयूर:-पश्यतु-पश्यतु मम शिरसि राजमुकुटमिव शिखां स्थापयता विधात्रा

एवाहं पक्षिराज: कृत:। अत: वने निवसन्तं माम् वनराजरुपेणापि द्रष्टुं सज्जा:

भवन्तु अधुना यत: कथं कोऽप्यन्य: विधातुं निर्णयं अन्यथा कर्तुं क्षम:।

शब्दार्था: -

शिरसि- सिर पर

शाखां – चोटी को

स्थापयता – स्थापित करने वाले

विधात्रा - परमात्मा के द्वारा

पक्षिराज: - पक्षियों का राजा

कृत: - बनाया गया

निवसन्तं - निवास करने वाले को

सज्जा: - तैयार

यत: - क्योंकि

विधातु: - परमात्मा के

अन्यथाकर्तुं - मिटाने के लिए

क्षम: - समर्थ है

अर्थ- देखो देखो सिर पर राजमुकुट की तरह चोटी को स्थापित करने वाले परमात्मा ने ही मुझे पक्षिराज बनाया है, इसलिए वन में निवास करने वाले मुझको जंगल के राजा के रुप में देखने के लिए आप लोग तैयार रहें । इस समय क्योंकि कोई भी दूसरा परमात्मा की व्यवस्था को कैसे व्यर्थ करने में समर्थ है।